माँ बाप की नाफरमानी आम हो जायेगी



हज़रत मुफ्ती अहमद खानपुरी दब.

महमुदुल मवाइज़ उर्दु से रिवायत का खुलासा लिप्यान्तर किया गया है.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

माँ बाप की नाफरमानी भी अल्लाह के अज़ाब को लाने का सबब है आजकल हमारे मुआशरा मे हम लोग देखते और सुनते है के बाज़ लोग अपने माँ बाप के साथ कैसा कैसा सुलूक करते है कया कया नाफरमानीया करते है और रोजाना इस उनवान पर वकीयात सुनते है के फला ने ये किया और फलाने ने अपने माँ बाप को सताया.

वो माँ बाप जो उसके बचपने मे उसकी हर चीझ को बरदाश्त किया उसकी हर ज़िद को पूरा किया और आज बडा हो के माँ बाप के साथ बुरा सुलूक करता है भला सोचो के अगर हम कोई चीझ मेहनत करके बनाये और फिर उसको कोई तोड दे तो हमे कैसा गुस्सा आता है और हमारे दिल मे कितनी तकलीफ होती है तो ठीक इसी तरह माँ बाप ने भी हमे बडा



करने और हमे कुछ बनाने, हमे कुछ सिखाने मे अपना सब कुछ लुता दिया और खूब कुरबानीया दी हमारे लिये के मेरा बेटा बडा हो कर कुछ बने और फिर बेटा उसके बाद उनको गालिया दे उनको सताये नाफरमानी करे तो उनके दिल मे कैसा गुज़रेगा उनका किया हाल होगा वो तो वोही जान सकते जो अपने बच्चो को बडा करते है और माँ-बाप को सताने वाले पर अल्लाह का कहर बरसता है उसकी मुसीबते आती है तो अल्लाह हमे माँ बाप की सही कदर करने की तौफीक अता फरमाये.

उसमे खास तौर पर माँ बाप के हुकूक की तरफ हुजूर ने मुतवज्जे फरमाया वैसे माँ बाप के हुकूक का मामला बडी ऍहमीयत रखता है कुरान मे अल्लाह ने उसके मुताल्लीक ऐसी ताकीद फरमायी के किसी और चीझ के मुताल्लीक कुरान ने ऐसी ताकीद नही फरमायी.

सुरऍ बनी इसराइल मे अल्लाह का इरशाद है तुम अल्लाह के अलावा किसी और की इबादत न करो और माँ-बाप के



साथ भलायी और हुसने सुलूक का मामला करो अल्लामा कुरतुबी (रह) जिन्की तफसीर मशहूर है वो फरमाते है के इस आयते करीमा मे अल्लाह ने अपनी इबादत के साथ माँ बाप के साथ हुसने सुलूक का हुकम दिया है.

इससे मालूम होता है के जहा अल्लाह ने अपनी इबादत का हुकम दिया वही अल्लाह माँ बाप के हुसने सुलूक और भलायी का हुकम किया है इसी तरह सूरएँ लुकमान मे अल्लाह ने अपने शुक्र अदा करने के साथ माँ बाप के शुक्र को जोडा के तुम मेरा शुक्र अदा करो और अपने माँ बाप का भी शुक्र अदा करो देखो इस सूरत की आयत मे अल्लाह ने अपने शुक्र के साथ साथ माँ बाप की शुक्र गुज़ारी को भी ज़रूरी करार दिया ये उसकी ऍहमीयत बतला रही है के माँ बाप के साथ अच्छा सुलूक किया जाये.

एक हदीस मे रसूलुल्लाहﷺ का इरशाद है के जो फरमाबरदार बेटा अपने माँ बाप की तरफ रहमत की नज़र से देखता है तो उसकी हर एक नज़र के बदले मे अल्लाह



मकबूल हज का सवाब उसके नामाये आमाल के अन्दर लिख देते है. ये इरशाद सुन कर सहाबा (रदी) ने अर्ज़ किया के अगर कोई आदमी दिन मे 100 मरतबा इस तरह मोहब्बत की नज़र से देखे तो किया अल्लाह उसको हर नज़र के बदले मे मकबूल हज का सवाब अता फरमायेंगे? तो रसूलुल्लाहﷺ ने जवाब मे इरशाद फरमाया जीहां अल्लाह की शान तो बहुत बडी है उसकी ज़ात तो बडी पाकीज़ा है उसके खजाने मे कोई कमी थोडी है इन्सानो के पास जो है वो खतम हो जाता है अल्लाह के खजाने तो ऐसे वसी है जब से कायेनात पैदा की है तब से अपनी मख्लूक की ज़रूरत को पूरा कर रहा है और उसकी बख्शीश का सिलसिला जारी है और उसके खजाने मे कोई कमी नही.